Ma Kamakhya Sadhana in Gupt Navratri

गुप्त नवरात्रों में भगवती कामाख्या का सिद्धि-विधान

Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal

+91-9410030994, +91-9540674788

shaktisadhna@yahoo.com , sumitgirdharwal@yahoo.com

www.yogeshwaranand.org www.baglamukhi.info



(प्रारम्भिक पूजन-विधान)

भगवती कामाख्या की उपासना क्यों करें-

1. धर्म, अर्थ अर्थात् धन-सम्पत्ति, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए।

2. आध्यात्मिक उन्नति के लिए।

3. आत्म-साक्षात्कार के लिए।

4. जीवन में सम्पूर्ण उन्नति के लिए।

5. कुण्डलिनी-जागरण के लिए तथा षट्चक्र-भेदन के लिए।

6. पशु भाव से वीर भाव तथा वीर भाव से दिव्य भाव की शीघ्र प्राप्ति के लिए।

7. प्रसन्न मन एवं स्वस्थ जीवन के लिए।

8. जीवन में सभी बाधाओं से मुक्ति के लिए।

9. वशीकरण शक्ति-जागरण के लिए।

10. जादू-टोने एवं अभिचार कर्मों से मुक्ति के लिए।

11. सम्पूर्ण वैभव एवं ऐश्वर्य-प्राप्ति के लिए।

12. काम-तत्व के विकास के लिए।

13. कलातत्व के विकास एवं सफलता प्राप्ति के लिए।

14. ज्ञानतत्व के विकास एवं ऊर्जा की सबलता के लिए।

15. सम्पूर्ण चेतना-प्राप्ति एवं शिवत्व-प्राप्ति के लिए।

16. ऋणमुक्ति, बीमारी तथा मुकदमे आदि से मुक्ति तथा उनमें विजय-प्राप्ति के लिए।

17. शत्रुबाधा, दुर्भाग्य, दरिद्रता, शारीरिक कष्ट, कलह एवं राजकीय बाधाओं से मुक्ति के लिए।

भगवती कामाख्या चारों पुरूषार्थों को प्रदान करने वाली तथा शीघ्र सिद्धिप्रदा है। आसाम के गोहाटी से करीब 10 किलोमीटर दूरी पर भगवती कामरू-कामाख्या का विशाल मन्दिर स्थित है, जंहा साधना करके सिद्धि प्राप्त करने की अभिलाषा मन में लिये दूर-दूर से साधक और तांत्रिक लोग आते रहते है। प्रतिवर्ष माह जून में लगने वाले अम्बूवाची मेले के समय तो लाखों की संख्या में साधक लोग यंहा उपस्थित होते हैं। उस समय भगवती कामाख्या को तीन दिन तक मासिक धर्म होता है जिस कारण यंहा का सम्पूर्ण परिवेश ही लालिमा ले लेता है। इस समय चूंकि भगवती रजस्वला होती हैं इसलिए तांत्रिक वर्ग के लिये यह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण समय होता है। यंहा रहकर वे जप-तप करके सिद्धियां प्राप्त करते हैं।

वर प्रदान करने में भगवती का एकाधिकार :- हम सब यह जानते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु और भगवान शिव क्रमशः सृष्टि के रचियता, पालनहार तथा संहार का कार्य सम्पादित करते हैं। लेकिन वे ये सब कार्य केवल और केवल भगवती की शक्ति से, उनकी प्रेरणा से ही सम्पन्न करते हैं। बिना शक्ति की सहायता के वे स्वयं में इन सब कार्यों के लिए सर्वथा असमर्थ हैं। जब-जब भी ये तीनों देव अथवा अन्य देवतागण किसी कार्य को करने में असमर्थ होते हैं या फिर वे किसी विपत्ति में पड़े हुए हों तब-तब ये उसी शक्ति की ही प्रार्थना करते हैं और देवी भी इन्हें तथा अपने भक्तों को दर्शन देकर इनके दुख और कष्टों को दूर करती हैं, क्योंकि ऐसा करने के लिए वे वचनबद्ध हैं।

स्त्री वामांगी कही गयी है। ब्रह्म के भी स्त्री पुरूष भेद से दो अंग हैं। उनका दाहिना अंग पुरूष का तथा बांया अंग स्त्री का है, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। इन दोनों अंगों में वाम अंग ही प्रधान माना जाता है। जब भी हम किसी देवी-देवता का नाम लेते हैं तो उनमे प्रथम नाम शक्ति का ही होता है, तब बाद में देवता का नाम आता है। यथा- सीता-राम, राधा-कृष्ण, प्रकृति-पुरूष, लक्ष्मी-नारायण आदि। इससे भी यह स्पष्ट होता है कि शक्ति ही महत्वपूर्ण है। बिना शक्ति किसी भी देवता का कोई आस्तित्व नहीं है।

दक्ष प्रजापति ने भगवती पार्वती की कठोर आराधना की थी और वरदान में देवी को ही अपनी कन्या रूप में जन्म लेने का निवेदन किया था, जिसके परिणामस्वरूप भगवती ने उमा के रूप में दक्ष के यंहा जन्म लिया। निश्चित समय पर भगवान शंकर के साथ उनका विवाह हुआ, लेकिन शंकर भगवान को वह नसेड़ी, श्मशानवासी, औघड़ आदि समझता था और इसलिए भगवती उमा का विवाह उनसे हो जाने के कारण वह अप्रसन्न रहता था और शिवजी का अपमान करने का कोई भी अवसर वह चूकता नहीं था। इसी कारण उसने विशाल यज्ञ का आयोजन किया जिसमें उन्होंने उमा-महेश्वर का अपमान किया और सती अपने पति के अपमान से आहत होकर यज्ञ में कूद गयी । शक्ति न होने के कारण मोह वश भगवान शिव उमा के निर्जीव शरीर को कंधे पर लेकर दौड़ने लगे। वे अत्यधिक भाव-विह्वल और क्रोधित हो गये थे। इससे सम्पूण सृष्टि कार्य ठप्प हो गया। सृष्टिकार्य में उत्पन्न हुए इसी व्यवधान को समाप्त करने के लिए भगवान विष्णु ने अपने चक्र से देवी के निर्जीव शरीर को टुकड़ों में विभक्त कर दिया। इस प्रकार जंहा-जंहा देवी के शरीर के अंग

गिरे वहीं-वहीं उस स्थान के नाम से भगवती की उपासना होने लगी। इसके साथ ही भगवान शंकर ने भी कहा कि इन स्थानों पर देवी सशरीर रहकर भक्तों के अभीष्ट को पूरा करेंगीं। मैं भी भैरव रूप में उन स्थानों पर सदैव देवी के साथ विद्यमान रहूंगा। कामरूप में भगवती का योनि वाला भाग गिरा जो कामाख्या के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार शताक्षी, मीनाक्षी, कामाख्या आदि सभी शक्तियां एक ही है।

इसके उपरान्त देवी ने भगवती पार्वती का रूप धारण किया। उसी शरीर-कोश से श्री अम्बिका जी का प्राकट्य शुम्भ-निशुम्भ के वध करने के लिये हुआ और देवताओं को इन राक्षसों के त्राण से मुक्त कराया। महिषासुर के वध के लिए अपराजिता देवी सकल देवताओं के शरीर से प्रकट हुई। भगवान शिव के वरदान देने के कारण भस्मासुर अत्यधिक बलशाली हो गया था। तब देवी की प्रेरणा से भगवान विष्णु ने सुन्दरी का रूप धारण करके, उसे नृत्य करवाकर उसके ही हाथों उसे भस्म कराया। कहने का तात्पर्य यह है कि जब किसी देवता पर अथवा किसी भक्त पर किसी भी प्रकार का संकट आया हो तो भगवती ही उन्हें इस संकट से उबारती हैं। जब राजा सुरथ और समाधि नाम के वैश्य की आराधना सेप्रसन्न होकर देवी ने प्रत्यक्ष दर्शन दिया और कहा कि-"मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्व परितुष्टा ददामितत्" अर्थात् मैं तुमसे प्रसन्न हूँ, तुम जो भी मांगोगे, वह सब कुछ दूंगी। इस प्रकार हम देखते हैं कि भक्ति पूर्वक देवी की पूजा अर्चना करने से देवी प्रसन्न होकर साधक को सब कुछ प्रदान कर ने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। जो भी वस्तु, मन्त्र, स्तुति आदि देवी को पसन्द हैं, उनको करने से वे त्वरित रूप में अचूक और अति शीघ्र ही फल प्रदान करती हैं। इसलिए साधक को चाहिए कि वह शास्त्रों में बतायी गयी विधि के अनुसार अथवा

अपने गुरूदेव के आदेशानुसार ही देवी की पूजा-उपासना करे और निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करे।

इसी प्रकार भगवती कामाख्या का भी प्रण है कि वे अपने भक्तों की सदैव स भी प्रकार से रक्षा करेंगीं और शीघ्र प्रसन्न होकर उन्हें साक्षात् दर्शन प्रदान करेंगीं। ऐसी दयालु और शरणदात्री को हमारा कोटि-कोटि प्रणाम।

एक स्थान पर व्यास जी राजा जन्मेजय से कहते हैं कि -" हे जन्मेजय! इन सभी पीठों की विधिवत् यात्रा करके श्राद्ध, तर्पण, दान-पुण्य करना चाहिए और भगवती की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। वंहा जाकर भगवती से बार-बार क्षमा-याचना करनी चाहिए। ऐसा करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। हे राजन! ये मुक्तिक्षेत्र देवी के प्रत्यक्ष विग्रह हैं। इन्हें सिद्धपीठ कहते हैं, अतः बुद्धिमान मनुष्य इनका सेवन अवश्य करे।

सारतः मैं इतना ही कहूंगा कि यह वास्तविकता है कि वह देवी सृष्टि के कण-कण में विद्यमान हैं । वे देवी सर्वरूपमयी हैं तथा यह सम्पूर्ण जगत् देवीमय है। अतः मैं उन विश्वरूपा कामाख्या देवी को प्रणाम करता हूॅ ।

सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत्।

अतोऽहं विश्वरूपां नमामि परमेश्वरीम्॥

॥अनुष्ठान-विधि॥

देवी के उत्तम साधक को सर्वप्रथम शौच, स्नानादि करके पवित्रावस्था में, स्वच्छ लाल वस्त्र धारण करके गोबर से लिपे हुए शुद्ध स्थान पर आसन पर बैठकर आचमन व प्राणायाम करना चाहिए। पूजा कक्ष में जाकर सर्वप्रथम आसन शुद्धि करें। आपके गुरूदेव से जिस ओर मुहं करके बैठने का आदेश हुआ है, उसी दिशा में मुंह करके बैठ जायें। अपने आसन के नीचे जल से एक त्रिकोण बनाकर उसका ि नम्नलिखित मंत्र से गंध पुष्पादि से पूजन करें-

मंत्र- ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नम :।

इसके बाद उस त्रिकोण का स्पर्श करके निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरू चासनम्।।

आचमन के लिए तांबे का बना पंचपात्र लेकर उसे जल से भर लें। यह स्मरण रखें कि आचमन करते समय जल का नाखून से स्पर्श तथा होंठ से आवाज नहीं होनी चाहिए। फिर आचमन करते समय बायें हाथ से चम्मच में जल लेकर दाहिने हाथ की हथेली में जल डालकर निम्नवत् उच्चारण करें-

दायें हाथ में एक थोड़ा जल लेकर ॐ केशवाय नमः। बोलकर जल मुंह में डाल लें।

पुनः दायें हाथ में जल लेकर ॐ नारायणाय नमः। बोलकर जल मुंह में डाल लें।

पुनः दायें हाथ में जल लेकर ॐ माधवाय नमः। बोलकर जल मुंह में डाल लें।

इसके बाद पुनः हाथ में जल लेकर ॐ हृषिकेशाय नमः। बोलकर हाथ धो लें।

इसके उपरांत शरीर तथा पूजन सामग्री की शुद्धि करें-

अपने शरीर पर जल छिड़कते हुए निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सावाह्याभ्यन्तरः शुचि।।

अब समस्त पूजन-सामग्री पर जल छिड़कते हुए उच्चारण करें ॐ पुण्डरीकाक्षं पुनातु।

इसके उपरान्त यज्ञोपवीत धारण करके पुनः दो बार आचमन करें। आचमन करने के बाद भस्म और टीका निम्नवत् लगायें-

"ॐ हुं फट्" बोलकर मस्तक, कण्ठ, हृदय तथा बाहु में त्रिपुण्ड धारण करें। फिर "ऐं" बोलकर रोली लें और उसमें "ह्रीं" बोलते हुए जल मिलाकर 'श्रीं" का उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली से ललाट के मध्य में एक लम्बा टीका लगायें। फिर "क्लीं" बोलते हुए हाथ धोकर "ॐ" का उच्चारण करते हुए देवी का ध्यान करें।

इसके बाद अंगन्यास व करन्यास करें-

ॐ कामाक्ष्ये अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ कामाक्ष्ये तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ कामाक्ष्ये मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ कामाक्ष्ये अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सृष्टिकारिणी कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ सृष्टि रक्षिणी करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji. Mob - 9410030994, 9540674788
Email : shaktisadhna@yahoo.com, Web – www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

ॐ कामाक्ष्ये कामं हृदयाय नमः। ॐ कामाक्ष्ये शिरसि स्वाहा। ॐ कामाक्ष्ये शिखायै वषट्।

ॐ सृष्टिकारिणी कवचाय हुम्। ॐ कामाक्ष्ये कामदायिनी नेत्रत्र्यां वौषट्। ॐ कामाक्ष्ये सृष्टि कारिणी अस्त्राय फट्।

इसके बाद पद्मासन में बैठकर भगवती कामाख्या का ध्यान करते हुए नेत्रों को बंद करके तीन बार प्राणायाम करें।

1. पूरक- नाक के दाहिने स्वर को अंगूठे से दबाकर बायें स्वर से श्वांस खीचते हुए नील कमल के समान श्याम वर्ण चतुर्भुजी देवी का ध्यान अपनी नाभि में करें। इस मध्य मंत्र ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यायै स्वाहा का 16 बार उच्चारण करें।

2. कुम्भक- दायें छिद्र को दबाये हुए ही नाक के बायें छिद्र को कनिष्ठा और अनामिका उंगलियों से दबाकर श्वांस को रोककर कमल के आसन पर बैठी हुई लाल रंग की चतुर्भुजी देवी का ध्यान अपने हृदय में करें। इस मध्य मंत्र ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यायै स्वाहा का 64बार उच्चारण करें।

3. रेचक- इस प्रक्रिया में नाक के दायें छिद्र को खोलकर धीरे-धीरे श्वांस छोड़ें और श्वेत रंग की तीन नेत्रों वाली चतुर्भुजी देवी का ध्यान अपने ललाट में करें। इस मध्य ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यायै स्वाहा मन्त्र का 32 बार उच्चारण करें।

यदि इतना सम्भव ना हो तो तीनों प्रक्रियाओं में 1:4:2 के अनुपात में मंत्र जप करें।

व्यापक न्यास- "क्लीं" कहते हुए सिर से पैर तक तीन बार अपने अंगों का स्पर्श करें।

अर्घ्य-स्थापन एवं शंख, घंटा आदि का पूजन-

"ॐ अस्त्राय फट्" बोलकर शंख को धो लें तथा अपने बायें ओर एक त्रिकोण मण्डल बनाकर उस पर आधार रखकर शंख स्थापित करके ॐ नमः बोलकर गंध, पुष्प, अक्षत आदि शंख में छोड़ दें । फिर उसमें जल भरें तथा ॐ वहि्न मण्डलाय नमः। ॐ सूर्य मण्डलाय नमः। ॐ चन्द्र मण्डलाय नमः। का उच्चारण करके शंख की पुनः गंध, अक्षत्, पुष्प आदि से पूजन करें। इसी प्रकार घंटा तथा घड़ियाली का भी पूजन करें।

इसके बाद मंगल श्लोक पढ़ें-

ॐ दुर्गे दुर्ग विनाशिनी भयहरी माता भयहारिणी।
कामाक्षा गिरिजा उमा भगवती वागीश्वरी योगिनी।।
बन्दी सुन्दर भैरवी सुललिता सिद्धेश्वरी रेणुका।
वाराही वरदायिनी गिरि-सुता कुर्वन्तु नो मंगलम्।।
श्रीमत्त्रिपुर भैरव्याः कामाख्यायोनि मण्डलम्।
भूमण्डले क्षेत्ररत्नं महामायाधि-वासितम्।।
मातः परतरं स्थानं क्वचिदस्ति धरातले।
प्रतिमासं भवेद्देवी सूत्र साक्षाद्रजःस्वला।।

Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji. Mob - 9410030994, 9540674788
Email : shaktisadhna@yahoo.com, Web – www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

तत्रत्या देवता सर्वाः पर्वतात्मकतां गताः।

पर्वतेषु वसन्त्येव महत्यो देवता अपि।।

तत्रत्या पृथ्वी सर्वा देवीरूपा स्मृता बुधैः।

नातः परतरं स्थानं कामाख्या-योनिमण्डलात्।।

अपने हाथ में पुष्प और अक्षत लेकर सभी देवी-देवताओं से आने एवं स्थापित होने की प्रार्थना करें-

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

ॐ सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो नमः।

आवाहयामि, स्थापयामि, पूजियामि।

(उपरोक्त तीनों मंत्रों के माध्यम से सभी देवताओं, देवियों और ऋषियों का आवाहन त था पूजन हो जाता है। यह अत्यन्त सूक्ष्म विधान उन साधकों/ साधिकाओं के लिए है, जिनके पास समय का अभाव है। जो साधक/साधिकाएं विस्तार से करना चाहें वे गी ता प्रेस गोरखपुर की नित्य पूजन पद्धति से अथवा हमारे द्वारा प्रकाशित किसी भी पुस्त क से कर सकते हैं।)

इसके बाद निम्नलिखित मंत्रों का उच्चारण करें-

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। उमा-महेश्वराभ्यां नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शची पुरन्दराभ्यां नमः। मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः। इष्ट देवताभ्यों नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्राम देवताभ्यों नमः। स्थान देवताभ्यो नमः। वास्तु देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः।

इस प्रकार मंत्रों का उच्चारण करने के उपरान्त हाथ में लिये गंधाक्षत आदि श्र द्धापूर्वक भूमि पर छोड़ दें तथा पुनः अपने हाथ में पुष्प, अक्षत् लेकर निम्नवत् देवी से प्रार्थना करें-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै शततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै निहताः प्रणतास्मताम्।।

इस प्रकार प्रार्थना करने के उपरान्त हाथ में कुश, अक्षत्, पुष्प व जल ले कर संकल्प लें-

कोई भी अनुष्ठान करने से पूर्व संकल्प लिया जाता है जिसका ज्ञान होना प्र त्येक साधक के लिए अनिवार्य है।

"ॐ तत् सदद्य परमात्मन् आज्ञया प्रवर्तमानस्य अमुक .... संवत्सरस्य श्री श्वेत-वाराह-कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे अमुक .... प्रदेशे अमुक नगरे अमुक .... स्थाने अमुक .... मासे अमुक पक्षे .... अमुक वासरे .... अमुक गोत्रोत्पन्न .... (नाम) अहं श्री भगवत्याः

पीताम्बरायाः प्रसाद-सिद्धि द्वारा मम सर्वाभीष्ट-सिद्धयर्थं (न्यायालये अस्मत् पक्षे विजयार्थं, नाना ग्रहोपग्रह प्रयोगं, नाना दुष्टरोग शान्त्यर्थे, शीघ्रं आरोग्य-लाभार्थं, सर्व दुष्ट बाधा, कष्ट ग्रह उच्चाटनार्थे, श्री भगवती पीताम्बरा प्रीत्यर्थे .... यथा-शक्ति यथा-ज्ञानेन यथा-सम्भावितोपचार द्रव्यैः सांगावरणैः श्री भगवती कामाख्या देवी पूजनं/ जपं करिष्ये।"

(अमुक के स्थान पर सम्बन्धित नामों का उच्चारण करना चाहिए।)

संकल्प के बाद हाथ की सामग्री भगवती के समक्ष अथवा भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद कलश की स्थापना करके वरूणदेव का पूजन करें और नवग्रह की स्थापना व पूजा करें।

कलश-पूजन निम्नवत् होगा-

ॐ अपां पतये वरूणाय नमः। अस्मिन् कलशे वरूणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम-आवहयामि। कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्म मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः। अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्ति-पुष्टिकरी तथा। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षय-कारकाः। गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु-कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरू॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय-कारकाः॥ ॐ वरूणाद्यावाहित-देवताः स्थापयामि।' 'ॐ वरूणाद्यावाहित-देवताभ्यो नमः।'

इस प्रकार वरूण देवता का आवाहन करके उनका गंध-पुष्प आदि से पूजन करें, फिर प्रार्थना करें-

: प्रार्थना:

''देव–दानव–संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।। त्वत्तवये सर्वतीर्थानि देवा: सर्वे त्वयि स्थिता:। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणा: प्रतिष्ठिता:।। शिव: स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापति:। आदित्या वसवो रूद्रा विश्वेदेवा: सपैतृका:।। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत: कामफलप्रदा:। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमिहे जलोद्‌भव। सानिध्यं कुरू मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।''

इसके बाद कलश पर स्थित पूर्णपात्र में वस्त्र के ऊपर पूर्ण पात्र अथवा नारियल र खें। पूर्ण पात्र के ऊपर नारियल को लाल वस्त्र में लपेटकर रखा जाता है। उसके उपरा न्त दीप आदि की स्थापना करें। फिर नवग्रहों का आवाहन करके उनका पूजन करें। अंत में नवग्रहों की प्रार्थना करें-

ॐ ब्रह्मा मुरारिः त्रिपुरान्तकारी भानु शशी भूमि सुतो बुधश्च।
गुरूश्च शुक्रो शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु।।

इसके बाद षोडश मातृका, घृतमातृका, चौंसठ योगिनी, अधिदेवता, प्रत्यधि देवता, पंचल ोकपाल, दश दिक्पाल, कार्तिकेय का विधि के अनुसार पूजन करके वृषभ, डमरू और त्रिशूल का भी पूजन करें। तदो्परान्त देवी कामाख्या का यन्त्र अथवा उनकी प्रतिमा या चित्र एक लाल वस्त्र पर रखकर भगवती कामाख्या का आवाहन करें-

सिंह-चर्मोत्तरासंगा कामाख्या विपलोदरी।
वैयाघ्रचर्मवसना तथा चैव हरोदरी।।
चण्डित्व चण्डिरूपांसि सुरतेजो महाबले।

Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji. Mob - 9410030994, 9540674788
Email : shaktisadhna@yahoo.com, Web – www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

आगच्छ तिष्ठ यज्ञेस्मिन् यावत् पूजां करोम्यहम्।।

इस प्रकार आवाहन करके उनका यथोपचार पूजन करके मंत्र-जप करें। उनका बारह अक्षर का मंत्र है- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा। वैसे तो मन्त्र में जितने अक्षर होते हैं, उतने ही लाख की संख्या में मन्त्र का जप किया जाता है। लेकिन यदि साध क के द्वारा एकलाख मन्त्रों का जप भी कर लिया जाता है तो मन्त्र को सिद्ध माना जा ता है। अतः नवरात्री में साधक को कम से कम एक लाख की संख्या में जप करना च ाहिए। फिर जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश कन्यापूजन करके उन्हें भोजन एवं दान-दक्षिण देकर सन्तुष्ट करना चाहिए।

यथाशक्ति जप करने के उपरान्त अन्त में नीचे लिखे मन्त्र से तीन बार पुष्पांजलि अर्पित करें-

ॐ भूः भुवः स्वः ॐ कामाक्ष्यै चामुण्डायै विद्‌महे, भगवत्यै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोद् यात।।

अन्त में किये गये जप का समर्पण भगवती को करें, यथा-

गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

उपर्युक्तानुसार आराधना करने से भगवती कामाख्या की पूर्ण कृपा साधक को प्राप्त होती है। साधक को आर्थिक अभावों से मुक्ति मिलती है, उसकी वाणाी और चेहरे मेंवशीकरण क्षमता में वृद्धि होती है जिस कारण समाज में उसकी लोकप्रियता ब ढ़ने लगती हैऔर भगवती से उसे चारों पुरूषार्थों की प्राप्ति होती है। स्वयं को तथा अ पने परिवार को ऐसा साधका जादू-टोने आदि अभिचार कर्मों में सदैव सुरक्षित रख सक ता है।

इसके अतिरिक्त भगवती कामाख्या की उपासना का सूक्ष्म एवं तांत्रिक विधान भी है, जिससे साधक शीघ्र ही साधना में सिद्धि प्राप्त कर सकता है। साधक को चाहिए कि सबसे पहले वह किसी योग्य गुरू से दीक्षा लेकर उनके निर्देशानुसार भगवती की उपासना करे। इस रीति से भगवती कामाख्या की उपासना करने से साधक अल्पकाल में ही बहुत कुछ ऐसा प्राप्त कर सकता है, सामान्य रूप से जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता है। इस प्रकार की साधनाओं में गुरू का महत्व अत्यधिक कहा गया है।

जो व्यक्ति केवल पुस्तक अथवा इन्टरनेट आदि के माध्यम से पढ़कर साधना में सिद्धि प्राप्त करना चाहता है, वह कभी भी सिद्धि को प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि कामाख्या अथवा कामाक्षा मन्त्रशास्त्र की सिद्धि का अधिकार केवल गुरू के निर्देशन में अथवा उसके समीप ही रहकर फलदायक माना गया है। अतः बिना गुरू के साधक को सिद्धि प्राप्त नहीं होती। इसलिए गुरू के निर्देशानुसार ही साधना को प्रारम्भ करना उचित है। सिद्ध किये गयेमन्त्र का उपयोग भी साधक तभी कर सकता है जब उसे उसके प्रयोग का ज्ञान हो अन्यथासाधक को निराशा ही हाथ लगती है। इसी लिए कहा गया है कि-

पुस्तके लिखित्वा विद्या सादरं यदि जप्यते,
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्प कोटि शतैरपि।
गुरूं विनापिशास्त्रे-ऽस्मिन्नाधिकारः कथेचन्।।

श्री दुर्गा-प्रयोग

भगवती दुर्गा की जिस साधना का वर्णन यंहा किया जा रहा है वह अत्यन्त ही सरल, शीघ्र सिद्धिदा और सुफलदायी है। जिस व्यक्ति अथवा

परिवार के साथ दरिद्रता, बीमारी, शत्रु-बाधा, और मुकदमें आदि के ग्रहण लग जाते हैं वह व्यक्ति अथवा परिवार भीतर तक खोखला हो जाता है, उसकी जीवन जीने की अभिलाषा समाप्त होने लगती है और नकारात्मक भाव उसे चारों ओर से घेरने लगते हैं । कोई खुशी किसी भी प्रकार की उसके जीवन में नहीं रह जाती। दिन-रात वह इन सबमें ही उलझकर रह जाता है। इन सब समस्याओं के कारण वह भीतर ही भीतर घुलने लगता है। परिवार में मातम सा व्याप्त रहता है। धीरे-धीरे उसकी आय के श्रोत बिल्कुल समाप्त होने लगते हैं और उसकी 'उच्चाटन' जैसी स्थिति होने लगती है।

यूं तो यह साधना कभी भी की जा सकती है, लेकिन नवरात्रों में यह विशेष सकारात्मक परिणाम देती है। इस स्तोत्र का ज्ञान 'महाभारत' के भीष्म-पर्व से प्राप्त होता है। श्रीकृष्ण ने युद्ध-भूमि में अर्जुन को अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए इस स्तोत्र के सम्बन्ध में बताया था और कहा था कि यदि तुम अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना चाहते हो तो भगवती दुर्गा के इस स्तोत्र की साधना करो। अर्जुन ने श्रीकृष्ण के कथनानुसार इस साधना को सम्पन्न किया और अन्त में युद्ध-भूमि में विजय को प्राप्त किया ।

इस स्तोत्र की साधना सम्पन्न करने के लिए साधक को अपने घर का कोई ऐसा स्थान चुनना चाहिए जो शांत और पवित्र हो। वंहा किसी भी प्रकार का कोई व्यवधान होने की सम्भावना ना हो। यदि घर में कोई ऐसा स्थान उपलब्ध न हो तब इस साधना देवी के लिए किसी प्राचीन शक्तिपीठ का चयन करना चाहिए। यदि ऐसा स्थान भी उपलब्ध न हो सके तो अपने निवास स्थान के निकट जो भी देवी का मन्दिर हो वंहा बैठकर यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji. Mob - 9410030994, 9540674788
Email : shaktisadhna@yahoo.com, Web – www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

इस स्तोत्र की साधना के सम्बन्ध में कहा गया है कि जो व्यक्ति प्रातःकाल इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे यक्ष, किन्नर, राक्षस, आदि का कोई भय नहीं रहता। शत्रुओं और सर्प आदि का किसी प्रकार का कोई भय उसे व्याप्त नहीं करता। राजकीय वर्ग का भी उसे कोई भय नहीं रहता। वाद-विवाद आदि में वह सर्वत्र विजय-प्राप्ति करता है और बंदी भी कैद अथवा जेल से मुक्त हो जाता है। भीषण संकट से घिर जाने पर भी वह उन सबसे मुक्त हो जाता है। न केवल इतना बल्कि साधक व्यक्ति आरोग्य, बल और श्री श्रीजी से सम्पन्न होकर दीर्घायु प्राप्त करता है। श्री दुर्गा जी का स्तोत्र एवं उसका विधान निम्नांकित है। स्नानादि से निवृत्त होकर अपने लाल आसन पर बैठकर भगवती दुर्गा का यथोपचार पूजन करें।पूजन में रक्त पुष्पों का प्रयोग करें। प्रारम्भिक क्रियाएं सम्पन्न करने के उपरान्त साधक को दाहिने हाथ में जल लेकर सर्वप्रथम विनियोग करना चाहिए, यथा-

विनियोग- ॐ अस्य श्री भगवती दुर्गा-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीकृष्णार्जुन-स्वरूपी नर-नारायणो ऋषिःअनुष्टुप् छन्दः, श्री दुर्गा देवता, ह्रीं बीजं ऐं शक्तिः श्रीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग करने के उपरान्त न्यास सम्पन्न करें-

<u>ऋष्यादि न्यास-</u>

श्रीकृष्णार्जुन-स्वरूपी-नरनारायण ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे।

श्रीदुर्गा देवतायै नमः हृदि।

ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।

ऐं शक्त्यै नमः पादयोः।

श्रीं कीलकाय नमः नाभौ।

Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji. Mob - 9410030994, 9540674788
Email : shaktisadhna@yahoo.com, Web – www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यासः-

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं।

ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्।

ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अंगन्यासः-

ॐ ह्रां हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रूं शिखायै वषट्।

ॐ ह्रैं कवचाय हुं।

ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

उपर्युक्त न्यास आदि सम्पन्न करने के उपरान्त भगवती दुर्गा का ध्यान करें-

ध्यान

सिंहस्था शशि-शेखरा मरकत-प्रख्या चतुर्भिर्भुजैः,।

शंख चक्र-धनुः शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।

आमुक्तांगद-हार-कंकण-रजत्-कांची क्वणन्-नुपुरा ।

दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु ना रत्नोल्लसत्-कुण्डला।।

॥स्तोत्र॥

नमस्ते सिद्ध-सेनानि, आर्ये मन्दर-वासिनि! कुमारि कालि कापालि, कपले कृष्ण-पिंगले।
भद्रकालि! नमस्तुभ्यं, महाकालि! नमोऽस्तुते। चण्डि चण्डे! नमस्तुभ्यं, तारिणिवरवर्णिनि।
कात्यायनि महाभागे करालि विजय जये! शिखि पिच्छ-ध्वज-धरे नानाभरण भूषिते।
अटूट-शूल-प्रहरणे खड्ग-खेटक-धारिणि! गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्ठे नन्दगोप-कुलाद्भवे।
महिषासृकप्रिये नित्यं कौशिकि पीत-वासिनि! अट्टहासे कोकमुखे नमेस्तेऽस्तु रणप्रिये।
उमे शाकम्भरि श्वेते कृष्णे कैटभनाशिनि! हिरण्याक्षि विरूपाक्षि सुधूम्राप्ति! नमोऽस्तु ते।
वेद-श्रुति-महापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि! जम्बू-कटक-चैत्येषु नित्यं सन्निहितालये।
त्वं ब्रह्मविद्या विद्यानां महानिद्रा च देहिनाम्। स्कन्ध-मातर्भगवति दुगे कान्तारवासिनि।
स्वाहाकरः स्वधा चैव कला काष्ठा सरस्वती। सावित्री वेदमाता च तथा वेदान्त उच्यते।
स्तुतासि त्वं महादेवि! विशुद्धेनान्तरात्मा। जयो भवतु मे नित्यं त्वत्-प्रसादाद्रणाजिरे।
कान्तार-भय-दुर्गेषु भक्तानां चालयेषु च। नित्यं वससि पाताले युद्धे जयसि दानवान्।
त्वं जम्भिनी मोहिनी च माया ह्रीः श्रीस्तथैव च। सन्ध्या प्रभावती चैव सावित्री जननी तथा।
तुष्टिः पुष्टि-र्धृति-र्दीप्तिश्चन्द्रादित्य-विवर्धिनी। भूतिर्भूति मतां संघये वीक्ष्यसे सिद्ध चारिणैः।

साधकों को चाहिए कि नवरात्रि में उपर्युक्त स्तोत्र का प्रतिदिन कम से कम 31 पाठ अवश्य करें। शेष भगवती की जैसी इच्छा। इसके उपरान्त प्रतिदिन प्रातःकाल में एक पाठ नित्य करते रहना चाहिए।

To receive free of cost monthly magazine send us a request on sumitgirdharwal@yahoo.com

Our Books :

1. Baglamukhi Sadhana Aur Sidhi – Rs 300*/=
2. Sri Baglamukhi Tantram – 350*/=
3. Sri Pratyangira Sadhana Rahasya – 370*/=
4. Shodashi Mahavidya – 320*/=
5. Agama Rahasya – Rs 450*/=
6. Shatkarm Vidhaan – Rs 330*/=
7. Mantra Sadhana – Rs 230*/=
8. Yantra Sadhana – Rs 350*/=

You can buy all of our books from www.asthaprakashan.com

Or deposit corresponding amount in our bank account –

Astha Prakashan Mandir

Axis Bank

917020072807944 (Current Account)

IFSC Code – UTIB0001094

Branch – Baghpat (U.P.) Pin 250609

*Rs 50 is already added in above said amount for Indian registered post shipping.